B.A-III
Psy (H)
Paper VII

परिकल्पना की विशेषताएँ

जब कोई शोध कर्ता किसी शोध समस्या का प्रतिपादन कर उसका समाधान करने के लिए आगे बढ़ता है, तो उसके मन में समाधान के रूप में कई तरह के अल्थायी प्रस्ताव आते हैं। शोधकर्ता के मन में कई तरह के परिकल्पनायें बनती हैं। मनोवैज्ञानिकों ने इस तथ्य को महत्वपूर्ण समझकर उस पर एक जुट होकर प्रकाश डाला है और बतलाया है कि अच्छे शोध परिकल्पना की पहचान उसकी कुछ कसौटियों या विशेषताओं के आधार पर की जा सकती है जो निम्नांकित है -

(i) परिकल्पना को जाँचनीय होना चाहिये - एक अच्छी परिकल्पना की पहचान यह है कि उसका प्रतिपादन इस ढंग से किया जाना संभव हो कि उसकी जाँच करने के बाद यह निश्चित रूप से कहा जा सके कि वह संभवतः सही है या संभवतः गलत है।

(ii) अध्ययन किये जाने वाले क्षेत्र की अन्य परिकल्पनाओं का बनायी गयी परिकल्पना के साथ तालमेल होना चाहिये :- यदि शोधकर्ता द्वारा तैयार की गई परिकल्पना क्षेत्र की अन्य परिकल्पनाओं के अनुकूल हो, तो इसे एक अच्छी परिकल्पना समझा जाता है।

Ex - यदि कोई शोधकर्ता यह परिकल्पना करता है कि अभ्यास से अध्ययन की मात्रा में वृद्धि होती है तो उसे एक अच्छी परिकल्पना कहा जायेगा।

(iii) परिकल्पना को मितव्ययी होना चाहिये - एक ही शोध समस्या के समाधान के लिए परिकल्पनाएँ कई तैयार की जा सकती हैं। उनमें से जो मितव्ययी हो, उसे अच्छा समझकर हमें चुनना चाहिए।

(iv) परिकल्पना में तार्किक पूर्णता तथा व्यापकता का गुण होना होना चाहिए :-
कुछ परिकल्पनाएँ ऐसी होती हैं जिसमें शोध समस्या का उत्तर तभी मिल जाता है जब अन्य कई उपपरिकल्पनाएँ तथा तदर्थ पूर्वकल्पनाएँ न तैयार कर लिए गए हो। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उनमें तार्किक पूर्णता एवं व्यापकता के आधार के अभाव होते हैं जिसके कारण वे स्वयं कुछ नयी समस्याओं को जन्म दे देते हैं और उनके लिए उपपरिकल्पनाएँ तथा तदर्थ पूर्वकल्पनाएँ तैयार कर लिया जाना आवश्यक हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में हम ऐसी अपूर्ण परिकल्पना की जगह पर पहले तरह की परिकल्पना जिसमें तार्किक पूर्णता एवं व्यापकता होती है, का ही चयन करते हैं।

(v) परिकल्पना को क्षेत्र के मौजूदा सिद्धांत एवं तथ्यों से संबंधित होना चाहिये - परिकल्पना बीचों-बीच की उत्तम मानी जाती है क्योंकि इसमें अधिकतम यथार्थ अनुमति प्राप्त हो जाती है जिससे एक ही और एक ही बारी में कई तथ्यों की व्याख्या संभव हो पाती है। इस तरह की परिकल्पना को बहुत अधिक सामान्य तथा बहुत अधिक विशिष्ट परिकल्पनाओं की तुलना में उत्तम माना जाता है।

(vi) परिकल्पना को प्राप्य वैज्ञानिक पद्धतियों से संबंधित होना चाहिए: एक अच्छी शोध परिकल्पना को क्षेत्र में उपलब्ध वैज्ञानिक पद्धतियों से संबंधित होना आवश्यक है। दूसरे शब्दों में, परिकल्पना में प्रस्तावित चर ऐसे हों जिनके मापने के लिए मनोवैज्ञानिकों के पास साधन उपलब्ध हों। यदि ऐसा नहीं होता है, तो फिर उस परिकल्पना में प्रस्तावित चरों की माप नहीं की जा सकती है और तब परिकल्पना की सत्यता की भी जाँच संभव नहीं हो पायेगी। इस तरह की परिकल्पना को अवैज्ञानिक घोषित किया जा सकता है।

(vii) परिकल्पना का संप्रत्ययात्मक रूप से स्पष्ट होना चाहिए - शोध परिकल्पना का सम्प्रत्ययात्मक रूप से स्पष्ट होने का तात्पर्य यह है कि परिकल्पना में व्यवहृत सम्प्रत्यय वस्तुनिष्ठ ढंग से परिभाषित हो तथा परिभाषा ऐसी हो जिससे कुछ स्पष्ट अर्थ निकलता हो तथा वह अधिकतर लोगों को मान्य हो। परिभाषा तथा व्याख्या ऐसी नहीं हो जिसे शोधकर्ता की व्यक्तिगत दुनिया की उपज कहा जा सके तथा जिसका अर्थ वही समझता हो।